● **सुनो, समझो और पढ़ो :**

४. सोना और लोहा

– रामेश्वरदयाल दुबे

जन्म : २१ जून १९०८ उ. प्र. **मृत्यु :** २४ जनवरी २०११ **रचनाएँ :** 'अभिलाषा', 'चलो-चले', 'डाल-डाल के पंछी',' माँ यह कौन', 'फूल और काँटा' आदि। **परिचय :** आप प्रसिद्ध बाल साहित्यकार हैं।

प्रस्तुत संवाद में रूप-रंग की अपेक्षा सद्‌गुणों के महत्त्व पर जोर दिया गया है।

अध्ययन कौशल

विभिन्न धातुओं के नाम और उनसे बनने वाली वस्तुएँ लिखो।

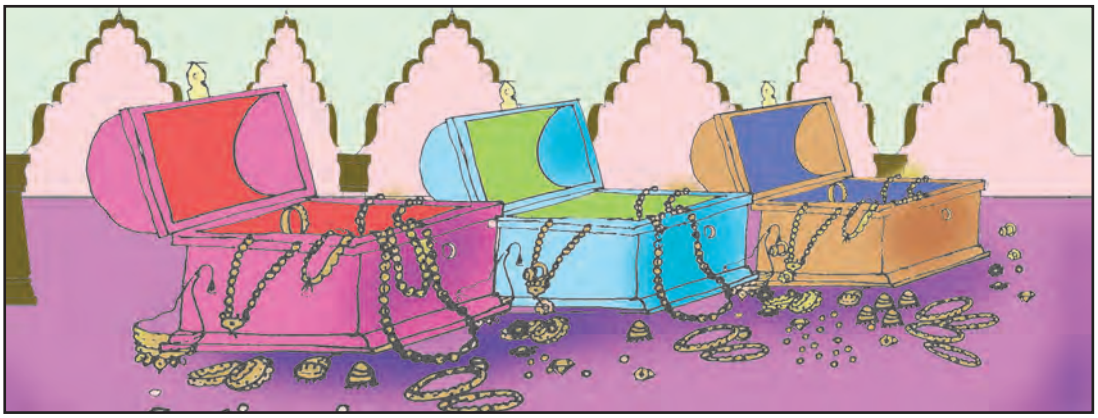

सोना : मैं स्वर्ण, मैं सोना, मेरी भी क्या शान है ! जिसे देखो, मुझे चाहता है; मेरे गुण ही ऐसे हैं।

लोहा : नमस्ते ! क्या कह रहे थे – मेरा रूप ही ऐसा है, मेरे गुण ही ऐसे हैं ?

सोना : मैं क्या झूठ बोल रहा हूँ ? मेरा चमकता पीला रंग देख ! संसार में मैं सबसे सुंदर हूँ।

लोहा : सोने, पहले यह तो बता कि तू तिजोरी से बाहर क्यों आया ? लाख बार कहा कि तेरा बाहर आना खतरे से खाली नहीं, मगर तू मानता ही नहीं। तेरी रक्षा का भार मुझपर है।

सोना : राजा की रक्षा उसके नौकर-चाकर करते ही हैं।

लोहा : अच्छा, तू राजा और मैं नौकर ? मेरे एक चाँटे से तेरा रूप बदल जाएगा। चल भीतर।

सोना : भले ही तुम मुझसे बड़े हो, मगर मुझे डाँटने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं। मेरे दस ग्राम का मूल्य पच्चीस हजार तो तुम पच्चीस-तीस रुपयों में किलो के हो।

लोहा : रुपयों में किसी वस्तु का मूल्य लगाना व्यर्थ है। देखना यह चाहिए कि कौन कितना उपयोगी है। सोने से पेट नहीं भरता। मैं सबका हाथ बँटाता हूँ।

सोना : अरे, लोहे से कैसे पेट भरता है ?

लोहा : मैं अगर न रहूँ, तो किससे बनेगा फावड़ा, कुदाल, खुरपी ? मकान बनाना हो, तो लोहा चाहिए। युद्‌ध में लोहे के ही अस्त्र-शस्त्र काम देते हैं। कोई बड़ा काम करना हो, लोहे के बिना हो ही नहीं सकता। रोटियाँ भी लोहे के तवे पर ही सेंकी जाती हैं। सभी कुछ लोहे से बनता है।

सोना : अँगूठी, माला, बाली लोहे से नहीं बनते। उसके लिए मेरी ही तलाश होती है। मैं राजा-महाराजाओं, धनिकों का प्यारा हूँ। मैं ऊँची जगह रहता हूँ, नीचे नहीं उतरता।

❑ संवाद का आदर्श वाचन करें। मुखर वाचन करवाएँ। मित्र के कौन-से गुण आपको अच्छे लगते हैं पूछें। खेल भावना के अनुसार अच्छे गुण स्वीकार करने और दोषों को दूर करने के लिए कहें। संवाद में आए कारकों का वाक्य प्रयोग कराएँ।

विचार मंथन

।। आराम हराम है ।।

लोहा : तू राजाओं-धनिकों का प्यारा है, मैं किसानों-मजदूरों का प्यारा हूँ। गरीबों की सेवा करने में मुझे सुख मिलता है। राजाओं के दिन लद गए अब तो श्रमिकों के दिन हैं।

सोना : मुझसे तो मेहनत नहीं होती। मैं तो आराम से रहता आया हूँ और रहना चाहूँगा।

लोहा : आराम हराम है। श्रम में ही जीवन की सफलता है, तुमने देखा है, मैं कितना काम करता हूँ। मैं कल-कारखानों में दिन-रात काम करता हूँ। जो काम करेंगे, उन्हीं का सम्मान होगा।

सोना : तो मेरा अब क्या होगा, दादा, मुझे घबराहट हो रही है।

लोहा : तू डाल-डाल मैं पात-पात, डर मत सोने ! मैं सदा तेरी रक्षा करता आया हूँ, आगे भी करूँगा, मगर अब तू घमंड करना छोड़ दे।

सोना : छोड़ दूँगा भैया, मगर मेरी रक्षा करना।

लोहा : अच्छा, अच्छा ! तू मेरा छोटा भाई है न। चल भीतर चल, बिना पूछे बाहर मत आना।

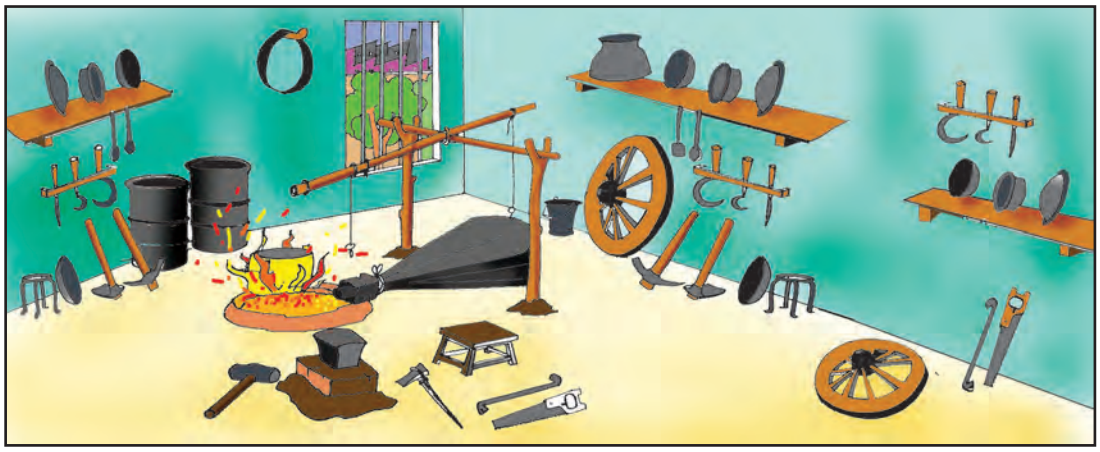

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

शान = ठाट-बाट
धनिक = धनवान
मूल्य = महत्त्व, कीमत
श्रमिक = मजदूर
तलाश = खोज

मुहावरा

दिन लद जाना = बीती बात होना

कहावत

तू डाल-डाल, मैं पात-पात = तुम निपुण हो परंतु मैं तुमसे अधिक निपुण हूँ।

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय लगाकर लिखो।

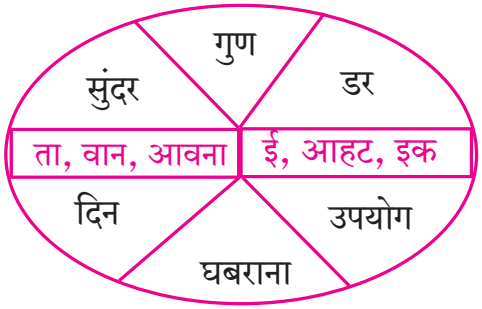

सुनो तो जरा

बस/ रेल स्थानक की सूचनाएँ ध्यानपूर्वक सुनकर सुनाओ ।

बताओ तो सही

थर्मामीटर में किस धातु का प्रयोग होता है, बताओ ।

वाचन जगत से

दुकानों के नाम फलक पढ़ो और उनका अभिनय करो ।

मेरी कलम से

अंकुरित अनाजों की सूची बनाओ और उपयोग लिखो।

सदैव ध्यान में रखो

प्रत्येक का अपना-अपना महत्त्व होता है।

जरा सोचो ..... चर्चा करो

यदि खनिज तेल का खजाना समाप्त हो जाए तो...

✻ सही या गलत बताओ ।

१. युद्ध में लोहे के ही अस्त्र-शस्त्र काम देते हैं ।
२. रोटियाँ भी सोने के तवे पर सेंकी जाती हैं ।
३. श्रम में ही जीवन की सफलता है ।
४. जो काम करेंगे, उन्हीं का अब सम्मान नहीं होगा ।

खोजबीन

रुपयों (नोट) पर लिखी कीमत कितनी और किन भाषाओं में अंकित है, बताओ ।

स्वयं अध्ययन

सद्‌गुणों को आत्मसात करने के लिए क्या करोगे, इसपर आपस में चर्चा करो ।

✻ निम्नलिखित शब्दों का रोमन लिपि में लिप्यंतरण करो ।

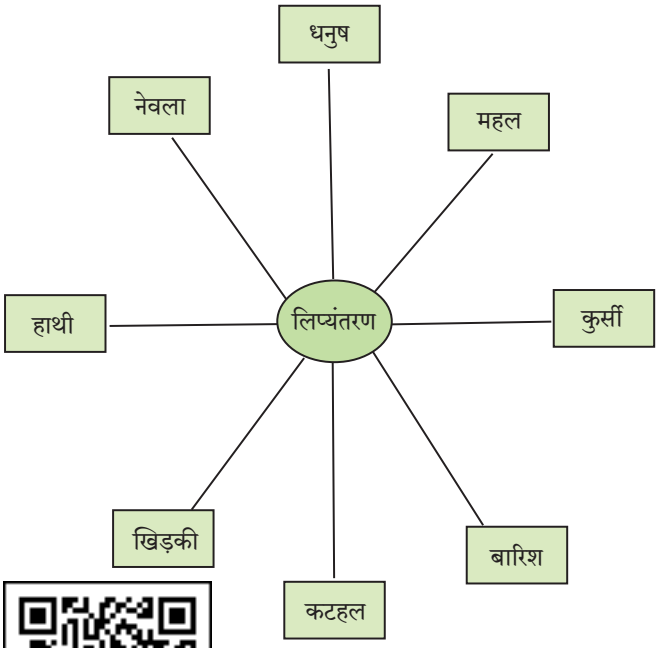

KLYI8K

✻ निम्नलिखित कारकों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

ने	----------
को	----------
से	----------
को	----------
से	----------
का, की, के	----------
में,पर	----------
अरे!	----------